संपादकीय

आज भले ही तकनीकी क्रांति के कारण अध्ययन सामग्री डिजिटल हो गई है, परंतु अध्ययन सामग्री का यह डिजिटल संस्करण मौलिक पुस्तकों का स्थान कभी भी नहीं ले सकता है। पुस्तकों का अपना संसार है, जो पाठक को पढ़ने का आनंद एवं रुचि प्रदान करता है। पुस्तकें ही वह साधन हैं जो ज्ञान एवं संस्कृति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाने तथा संरक्षण प्रदान करने में मदद करती हैं। मनुष्य की औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा तथा जीवन मूल्यों के विकास में पुस्तकों का प्रमुख स्थान होता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यूनेस्को द्वारा 1995 में प्रतिवर्ष 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस मनाने का संकल्प लिया गया। इसी संकल्प के साथ, *भारतीय आधुनिक शिक्षा* का यह अंक भी पाठकों को पढ़ने का आनंद लेने और पढ़ने की कला को बढ़ावा देने में योगदान देगा।

इस अंक की शुरुआत 'शिक्षा का आशय' नामक लेख से की गई है, जिसमें वैदिककालीन शिक्षा, अंग्रेज़ी उपनिवेश काल अथवा पाश्चात्य ज्ञान की शिक्षा तथा आज की बाज़ारी व उपभोग प्रधान शिक्षा पर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी उदार और समावेशी मानसिकता को बताने वाले नवाचारों पर ज़ोर दिया गया है तथा शैक्षिक विचारों, आदर्शों, मूल्यों आदि पर गहन चिंतन एवं व्यापक जन कल्याणकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

आज के पाश्चात्य ज्ञान तथा बाज़ारी शिक्षा में 'भारतीयता' के मूल्यों पर केंद्रित शिक्षा पर आधारित लेख 'दोराहे पर है शिक्षा' में बताया गया है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में 'भारतीयता' का पुट होना अनिवार्य है। इस प्रकार इस लेख में शिक्षा से जुड़े भारतीयता के समस्त सरोकारों को समझाने का प्रयास किया गया है।

'समुदाय शिक्षण प्रतिमान—शिक्षक शिक्षा में एक श्रेष्ठ व्यवहार' नामक लेख में परंपरागत पाठ की तुलना में समुदाय शिक्षण प्रतिमान की विशेषताएँ निर्दिष्ट की गई हैं। शिक्षा की उपादेयता सिद्ध करने तथा समाज की समस्याओं को हल करने में यह प्रतिमान महत्वपूर्ण हो सकता है। शांति शिक्षा, शांति मूल्यों और कौशलों का मानव जगत् तथा प्रकृति के बीच सामंजस्य बिठाने का कार्य करती है। इसी पर आधारित लेख 'विद्यालयी शिक्षा में शांति शिक्षा' दिया गया है।

'गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण आवश्यक क्यों?' नामक शोध पत्र में बताया गया है कि गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण, शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण में *हैंड्स ऑन* एवं *माइंड्स ऑन*, दोनों ही होते हैं अर्थात् प्रयोग करते समय विद्यार्थियों का शरीर एवं दिमाग दोनों सक्रिय होते हैं। इस शोध में शोधक ने मध्य प्रदेश के शहडोल ज़िले के विद्यालयों का अवलोकन एवं विद्यार्थियों से चर्चा कर यह पाया कि विद्यार्थियों को प्रयोग करके जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह स्थायी होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षण या प्रश्न-पत्र का विश्वसनीय तथा वैध होना, आवश्यक गुण है। अतः विज्ञान विषय में 'विज्ञान उपलब्धि परीक्षण—निर्माण तथा मानकीकरण' नामक शोध पत्र में विज्ञान

उपलब्धि परीक्षण के निर्माण की प्रक्रिया तथा उसके मानकीकरण के चरणों को प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान समय में विश्व अधिक प्रतियोगी होता जा रहा है और इसी संदर्भ में प्रत्येक अभिभावक यह चाहता है कि उनके बच्चे सफलता के शीर्ष स्तर पर पहुँचे, परंतु उपलब्धि के उच्च स्तर की इच्छा, बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा विद्यालय पर एक दबाव का निर्माण करती है। अतः बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित कारकों का अध्ययन करना और उन कारकों के प्रभाव को समझना बहुत आवश्यक हो गया है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन' दिया गया है, जिसके परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से सह-संबंधित हैं।

संस्कृत आयोग (1956 एवं 2012) ने यह सिफ़ारिश की थी कि पारंपरिक संस्कृत ज्ञान को आधुनिक शिक्षा प्रणाली से जोड़ा जाए। इस बिंदु को ध्यान में रखकर लेख 'संस्कृत भाषा शिक्षण की एक नयी दृष्टि—निर्माणवाद' में 'पुरातन संस्कृत विद्या' एवं 'आधुनिक निर्माणवाद' के बीच एक सेतु का निर्माण करते हुए संस्कृत भाषा शिक्षण को एक नयी दृष्टि प्रदान करने का प्रयास किया गया है। वहीं, शिक्षकों द्वारा संस्कृत व्याकरण शिक्षण के अंतर्गत विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के संप्रत्ययों की समझ विकसित करने के लिए 'संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान द्वारा संस्कृत व्याकरण शिक्षण' नामक लेख दिया गया है।

'बच्चों की दुनिया और उनका बचपन' नामक लेख विद्यालयों में बच्चों पर पड़ने वाले दबावों, घरों के हालात, बच्चों की मन:स्थिति, शिक्षकों के रवैया व खुले अंदाज़ में बच्चों की विद्यालयी व घरेलू परवरिश पर एक दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में सफलता उच्च स्तरीय जीवन का पर्याय बन गई है। आज हर व्यक्ति अपनी सफलता के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है। शिक्षा जगत में हुए शोधों में यह पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि कई संज्ञानात्मक तथा गैर-संज्ञानात्मक कारकों द्वारा प्रभावित होती है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण के साथ संबंध' दिया गया है। इस शोध में पाया गया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण के साथ सार्थक संबंध है। इस अंक के अंत में 'शिक्षा और जटिल होते समाज के विमर्शों की पड़ताल' पर एक पुस्तक समीक्षा दी गई है, जो अमन मदान द्वारा रचित पुस्तक *शिक्षा और आधुनिकता—कुछ समाजशास्त्रीय नज़रिए* पर अधारित है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास (Best Practices), पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, क्षेत्र अनुभव (Field Experiences) आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर भेजेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति